International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 67-69

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 67-69
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-09-2020
Accepted: 12-10-2020

डॉ॰ कविता झा
पी. जी. टी., झरियाराज +2
उच्च विद्यालय, झरिया,
धनबाद, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ॰ कविता झा
पी. जी. टी., झरियाराज +2
उच्च विद्यालय, झरिया,
धनबाद, झारखंड, भारत

पाणिनीयव्याकरण में रक्ताद्यर्थक तद्धित प्रत्ययों का विवेचन

डॉ॰ कविता झा

सारांश
आचार्य पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में 1106 सूत्रों के द्वारा 240 तद्धित प्रत्ययों एवं लगभग 300 अर्थों का विवेचन किया है। इन 300 अर्थों में से 'रक्त' आदि 22 अर्थों में विहित होने वाले 'अण्' आदि प्रत्यय रक्ताद्यर्थक प्रत्यय के नाम से अभिहित किए जाते हैं।

मुख्य शब्द- पाणिनि, रक्ताद्यर्थक, कात्यायन, पतञ्जलि, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

प्रस्तावना
आचार्य पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी के तृतीय, चतुर्थ एवम् पञ्चम अध्यायों में सर्वविध प्रत्ययों का अन्वाख्यान किया है, जिनमें 'तद्धिताः' [1] के अधिकार में कुल 1106 सूत्रों के द्वारा प्रायः 240 तद्धित प्रत्ययों का अन्वाख्यान किया गया है। इनमें चतुर्थ अध्याय के द्वितीय पाद के प्रारम्भिक 66 सूत्रों एवं तत्रोल्लिखित वार्त्तिकों के द्वारा रक्त आदि 24 अर्थों में विहित होने वाले प्रत्ययों का अन्वाख्यान किया गया है।

रक्ताद्यर्थक-तद्धित-प्रत्यय
रक्त आदि 24 अर्थ अग्रलिखित हैं - 1. रक्त, 2. युक्त, 3. दृष्ट, 4. परिवृत, 5. अपूर्ववचन, 6. उद्धृत, 7. शयितृ, 8. संस्कृत, 9. पौर्णमासी, 10. देवता, 11. वर्त्तन, 12. भ्रातृ, 13. पितृ, 14. मातृ, 15. दुग्ध, 16. समूह, 17. विषय, 18. आदि, 19. प्रयोजन, 20. योद्धृ, 21. प्रहरण, 22. क्रिया, 23. अधीते, तथा 24. वेद।

इन्होंने 'रक्त' अर्थ में दो सूत्रों के द्वारा दो प्रत्ययों का, 'युक्त' अर्थ में चार सूत्र विहित हैं, इनमें से दो लोप विधान करने वाले सूत्र हैं, अतः अवशिष्ट दो सूत्रों के द्वारा दो प्रत्ययों का, 'दृष्ट' अर्थ में तीन सूत्रों के द्वारा चार प्रत्ययों का, 'परिवृत' अर्थ में तीन सूत्रों के द्वारा तीन प्रत्ययों का, 'अपूर्ववचन', 'उद्धृत', 'शयिता' अर्थों में एक-एक सूत्र के द्वारा एक-एक प्रत्यय का, 'संस्कृत' अर्थ में पाँच सूत्रों के द्वारा चार प्रत्ययों का, 'पौर्णमासी' अर्थ में तीन सूत्रों के द्वारा दो प्रत्ययों का, 'पिता' एवम् 'माता' अर्थ में एक ही सूत्र के द्वारा एक प्रत्यय का,

'समूह' अर्थ में बाईस सूत्रों के द्वारा सत्तरह प्रत्ययों का, 'विषय' अर्थ में तीन सूत्रों के द्वारा चार प्रत्ययों का, 'आदि' अर्थ में एक सूत्र के द्वारा एक प्रत्यय का, 'प्रयोजन' एवं 'योद्धृ' इन दोनों अर्थों में एक सूत्र के द्वारा एक प्रत्यय का, 'प्रहरण' अर्थ में एक सूत्र के द्वारा एक प्रत्यय का, 'क्रिया' अर्थ में एक सूत्र के द्वारा एक प्रत्यय का, 'अधीते' और 'वेद' अर्थ में विहित नौ सूत्रों में से तीन सूत्र लोप विधान करने वाले हैं, अतः अवशिष्ट छह सूत्रों के द्वारा पाँच प्रत्ययों का विधान किया है।

उपर्युक्त चौबीस अर्थों के अन्वाख्यान के लिए प्रयुक्त 66 [1] सूत्रों में से चार लोप विधायक सूत्र, दो निपातन सूत्र, एक नियम सूत्र और दो अतिदेश सूत्र हैं। अवशिष्ट सभी सूत्र विधि सूत्र हैं। चार लोप विधायक सूत्रों में से दो [2] 'युक्त' अर्थ में और दो [3] 'अधीते' तथा 'वेद' अर्थ में पठित हुए हैं। दो निपातन सूत्रों में से एक [4] 'पौर्णमासी' अर्थ में तथा दूसरा [5] 'भ्राता', 'पिता' एवम् 'माता' अर्थ में पठित हुआ है। एक [6] नियम सूत्र है जो 'अधीते' एवं 'वेद' अर्थ में पठित हुआ है। दो अतिदेश सूत्रों में से एक [7] 'देवता' अर्थ में और दूसरा [8] 'समूह' अर्थ में पठित हुआ है। इन रक्तादि अर्थों में समेकित रूप से दश गणों का उल्लेख हुआ है, जिनमें से समूह अर्थ में चार, विषय अर्थ में तीन, अधीते एवं वेद अर्थ में तीन गणों का उल्लेख हुआ है।

आचार्य कात्यायन ने पाणिनीय व्याकरण की पूर्णता हेतु पाणिनि के 'रक्त' आदि बाईस अर्थों के अन्तर्गत उल्लिखित 66 सूत्रों में से तेईस सूत्रों पर सैंतीस वार्त्तिकों की रचना की। इन वार्त्तिकों में से 'ठञ् प्रकरणे तदस्मिन् वर्त्तत इति नवयज्ञादिभ्य उपसङ्ख्यानम्' [9] और 'अवेर्दुग्धे सोढ-दूस-मरीसचः' [10] दो वार्त्तिकों के द्वारा दो नवीन अर्थों 'वर्त्तन' और 'दुग्ध' का उल्लेख किया है। इन दोनों अर्थों में से 'वर्त्तन' अर्थ में 'अण्', 'ठञ्' तथा 'दुग्ध' अर्थ में 'सोढ', 'दूस', 'मरीसच्' प्रत्ययों का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त 'रक्त' अर्थ में पाँच वार्त्तिकों के द्वारा तीन नवीन प्रत्ययों 'अन्', 'कन्' तथा 'अञ्', 'भ्राता' अर्थ में एक वार्त्तिक के द्वारा दो प्रत्यय 'व्य', 'डुलुच्', 'पिता', 'माता' अर्थ में एक वार्त्तिक के द्वारा एक प्रत्यय 'डामहच्', 'समूह' अर्थ में दो वार्त्तिकों के द्वारा दो प्रत्ययों 'ख', 'णस्' तथा 'अधीते' एवं 'वेद' अर्थ में दो वार्त्तिकों के दो प्रत्ययों 'इकन्' एवं 'षिकन्' का उल्लेख किया है। वार्त्तिककार कात्यायन ने पाणिनि के प्रत्यय, सूत्र एवं सूत्रगत पदों पर भी विचार किया है।

महाभाष्य में सम्प्रति पाणिनि के 'रक्ताद्यर्थक-प्रकरण' में 'रक्त' इत्यादि अर्थों में उल्लिखित प्रत्ययों से सम्बद्ध 66 सूत्रों में से 35 सूत्र ही मिलते हैं। भाष्यकार ने पाणिनीय सूत्र एवं कात्यायनीय वार्त्तिकों पर विचार करने के अनन्तर समूह अर्थ में भाष्य-वार्त्तिक के द्वारा तीन नवीन प्रत्ययों 'ऊल', 'ढञ्' तथा 'कटच्' का उल्लेख किया है, जिसकी चर्चा इनके पूर्व के आचार्यों ने नहीं की है।

काशिकावृत्ति में रक्त आदि चौबीस अर्थों में विहित होने वाले प्रत्ययों के विधायक सभी सूत्र एवं वार्त्तिक पठित तथा व्याख्यात हैं। यहाँ 'समूह' अर्थ में विहित पाँच नवीन वार्त्तिकों के द्वारा काण्ड, स्कन्धच्, खण्डच् एवं ग्रामच् - इन चार नवीन प्रत्ययों का प्रयोग किया है। इसमें महाभाष्य में पठित 'कटच्' प्रत्यय का अभाव है। काशिकावृत्ति में दस गण उल्लिखित हैं लेकिन इसमें 'समूह' अर्थ में एक विशिष्ट गण 'कमलादि' गण का समावेश हुआ है। सूत्र एवं वार्त्तिक पर विचार करने के बाद वृत्तिकार ने गणों के स्वरूप पर भी विचार किया है। गणों के स्वरूप पर विचार करने वाले ये प्रथम आचार्य हैं।

आचार्य भट्टोजिदीक्षित ने यद्यपि अपनी 'सिद्धान्तकौमुदी' की रचना 'अष्टाध्यायी' के सूत्रों में व्यतिक्रम लाकर की है, पुनरपि रक्ताद्यर्थक प्रकरण के अन्तर्गत पठित सूत्रों में प्रायः व्यतिक्रम नहीं है। इन्होंने रचना-प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों का भी समावेश बीच-बीच में किया है। इन्होंने पूर्वाचार्यों के सभी आवश्यक एवम् उल्लेखनीय बातों का उल्लेख अत्यल्प शब्दों में किया है।

निष्कर्ष

आचार्य पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में रक्त आदि अर्थों में विहित होने वाले प्रत्ययों का सूत्रों में विस्तार से विवेचन किया है। जिसपर वार्त्तिककार कात्यायन, महाभाष्यकार पतञ्लि, काशिकावृत्तिकार वामन-जयादित्य तथा वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीकार भट्टोजिदीक्षित ने अपने प्रमुख विचारों से उन्हें परिवर्धित किया है।

सन्दर्भ

1. अष्टाध्यायी, 4.2.1-66
2. वही, 4.2.4-5
3. वही, 4.2.64-65

4. वही, 4.2.23
5. वही, 4.2.36
6. वही, 4.2.66
7. वही, 4.2.34
8. वही, 4.2.46
9. अष्टाध्यायी-वार्त्तिक, 4.2.35.1
10. वही, 4.2.36.5

ग्रन्थसूची

1. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त, अष्टाध्यायीभाष्य प्रथमावृत्ति (1964), रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर, पंजाब
2. झा, डॉ॰ सतीशचन्द्र, कात्यायनवार्त्तिकानाम् भाषाशास्त्रीयमध्ययनम् (1985), प्र॰ बिहार मनीषा, बिहार विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर-842001
3. वामन-जयादित्य, काशिका, सम्पा॰ स्वामी द्वारिकाप्रसाद शास्त्री तथा कालिका प्रसाद शुक्ल, प्राच्य भारती प्रकाशन, वाराणसी
4. पतञ्जलि, व्याकरणमहाभाष्य (1967), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
5. दीक्षित, भट्टोजि, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली